द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय - द्वितीय

2.1 प्रस्तावना :-

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो चाहे सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हो संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारंभिक कदम है। समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है।

2.2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन :-

संबंधित साहित्य की समीक्षा अनुसंधायक को किस क्षेत्र में वह अनुसंधान करने वाला है, उसमें वर्तमान ज्ञान से परिचय कराती है तथा निम्न विशिष्ट उद्देश्य पूर्ण करती है।

1. संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधायक को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है।
2. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुंसधानकर्ता को पूर्व में किये गये शोधकार्य की पुनरावृत्ति से रोकता है।
3. उपयुक्त शोध विधियों के चयन में मदद करता है।
4. परिकल्पना को लागू करने तथा अनुसंधान की रूपरेखा निर्धारित करने में सहायक होता है।
5. तुलनात्मक अध्ययन व तत्संबंधी व्याख्या हेतु आंकड़ों का निर्धारण करने में मदद करता है।

2.3 संबंधित शोध कार्यों का पुनरावलोकन :-

प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता उन्नयन तथा शैक्षिक प्रबन्ध के विकेन्द्रकरण की दिशा में मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सबसे बड़ी उपलब्धि देश भर में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानं की स्थापना है।

इस संदर्भ में संबंधित प्राप्त साहित्य एवं शोध कार्यों का विवरण निम्नलिखित है :-

उपासनी (1966) ने ''महाराष्ट्र के ग्रामीण शालाओं के शिक्षकों के वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन'' शीर्षक पर शोध किया।

इस शोध कार्य के उद्देश्य वर्तमान में चल रहे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की कमियों तथ अच्छाईयों का पता आत्म मूल्यांकन विधि द्वारा पता करना था।

अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित है :-

1. वर्तमान में जो आवश्यक योग्यता प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में प्रवेश के लिये या शिक्षक चुनाव के लिये रखी गयी थी उनको बढ़ाया जाना चाहिए था।
2. प्राथमिक शिक्षकों का प्रशिक्षण नई चुनौती के रूप में रखा जाना चाहिए।
3. प्राथमिक शिक्षकों की ट्रेनिंग का समय बढ़ाया जाना चाहिए।

मालवीय (1968) के द्वारा 'मध्यप्रदेश में शिक्षक प्रशिक्षण'' यह अध्ययन प्रस्तुत किया गया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आधुनिक चलन और मध्यप्रदेश में शिक्षक प्रशिक्षण की समस्या को उजागर करना इसके प्रमुख निष्कर्ष थे –

1. पारंपरिक विधि और शोध निष्कर्ष में कोई विस्तार नहीं है
2. मूल्यांकन तकनीक अकसर नियमबद्ध होती है और बहुत अधिक असमानताएँ इसके आंतरिक और बाह्य मूल्यांकन में दिखाई देती है।
3. चूंकि मध्यप्रदेश एक कृषि प्रधान देश है, इसलिए ग्रामीण विकास के कुछ क्रियाकलाप शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में जोड़ने चाहिए।
4. शिक्षक का अच्छा समन्वय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अधिक प्रभावशाली बनाता है।
5. राज्य के शिक्षक संस्थानों में उपयुक्त पुस्तकालय सुविधा नहीं है।
6. स्कूल के निरीक्षक तथा सामाजिक अनुसंधानकर्ता के प्रशिक्षण का कोई प्रावधान नहीं है।

एस.आई.ई. गुजरात (1966) ने ''केस स्टडीज ऑफ प्राइमरी टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट ऑफ गुजरात'' शीर्षक पर शोध कार्य किया।

शोध कार्य के उद्देश्य गुजरात के प्राथमिक शिक्षक ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट की स्थिति तथा वर्तमान चित्र प्रस्तुत करना।

शोध कार्य के निष्कर्ष निम्न प्रकार से थे :-

1. अधिकतर संस्थानों में भौतिक सुविधाओं की कमी।
2. किसी भी संस्थान में साइंस लेबोरेटरी नहीं थी।
3. छात्रों तथा अध्यापकों के लिए उपयुक्त पठन कक्षों की बहुत कमी थी।
4. 50 प्रतिशत स्टाफ के सदस्यों को रिफ्रेसर कोर्स करने की आवश्यकता थी।
5. कोई भी इंस्टीट्यूट योजनाबद्ध तरीके से नहीं चल रहे थे।

भटनागर (1979) : ने ''उत्तर प्रदेश के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान का संगठनात्मक वातावरण और उसके प्रभावित से संबंधों का अध्ययन'' किया गया, इस अध्ययन के प्रमुख निम्नलिखित निष्कर्ष थे :–

1. उत्तरप्रदेश में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण में उच्च स्तरीय बाधक तत्व अधिकारत्मकता तथा अकादमिक तत्वों पर अत्यधिक जोर पाया गया, निम्न स्तरीय अनुशासन व नियंत्रण और सुविधाओं की कमी पाई गई।
2. बड़े संस्थानों में वातावरण में छोटे संस्थानों की तुलना में उच्च अधिकारिता, उच्च विश्वास, अधिक अकादमिक और उच्च स्तरीय अनुशासन एवं नियंत्रण का प्रभाव दिखाई देता है। दूसरी ओर छोटे संस्थान में अधिक रोक, अधिक लोकतांत्रिकता और स्वतंत्रता तथा साधनों की कमी का वातावरण दृष्टिगोचर होता है।
3. शहरी संस्थाओं की अपेक्षा ग्रामीण संस्थाओं में उच्च अकादमिक स्तर उच्च स्तरीय अनुशासन और नियंत्रण पर जोर दिया जाता है।
4. संस्था की प्रभाविता उसके संगठनात्मक वातावरण से प्रभावित होती है।

गुप्ता (1982) : ने ''पंजाब के कुछ चयनित प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के इनपुट व आउटपुर के संबंधों का अध्ययन'' किया इसके प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे :–

1. इनपुट जैसे शिक्षक प्रशिक्षकों की अकादमिक अभिप्रेरणा की गुणवत्ता नेतृत्व के तरीकों, संगठनात्मक वातावरण, प्रशिक्षण विधि, भौतिक सुविधाएं और आउटपुट जैसे परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों के बीच महत्वपूर्ण सहसंबंध पाया जाता है।
2. प्रायोजिक प्राप्तांकों के रूप में इनपुट व आउटपुट के बीच सार्थक सहसंबंध नहीं पाये गये।

जांगीरा (1982) : ने ''भारत में सेवाकालीन प्राथमिक शिक्षा शिक्षा'' के संबंध में अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर हुये प्रारंभिक शिक्षकों की शिक्षा पर आधारित प्रोजेक्ट रिपोर्टों का पुनरावलोकन किया। प्राथमिक शिक्षण प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय अध्ययनों पर आधारित शोध एवं विकास मार्गदर्शक बनाए एवं मार्गदर्शक बिन्दुओं का विकास किया।

पाटिल (1988) : ने ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति हेतु बृहद शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का महाराष्ट्र प्रांत के धुले जिले के प्राथमिक व माध्यमिक शाला के शिक्षकों का अध्ययन'' शीर्षक के अंतर्गत लघु शोध किया। अध्ययन के उद्देश्य राष्ट्रीय एकता लाने में शिक्षकों द्वारा वर्तमान पाठ्यक्रम के उपयोग का

अध्ययन शिक्षकों द्वारा बालकों में राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास की विधियों का अध्ययन, सतत् मूल्यांकन और लक्ष्य प्राप्ति के संबंध का अध्ययन बालकेन्द्रित अधिगम की गतिविधियों के संबंध में शिक्षक की भूमिका का अध्ययन था।

इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं :-

1. राष्ट्रीय एकता को प्राप्त करने के लिए सामाजिक समानता होनी जरूरी है।
2. छात्रों के मूल्यांकन का सर्वोत्तम प्रकार मासिक मूल्यांकन है।
3. मूल्यांकन में वस्तुनिष्ठ पर अधिक महत्व दिया है।
4. प्रशिक्षण की अवधि कम थी।
5. छात्रों में सृजनात्मकता का विकास क्रियाओं को आयोजित करके किया जाता है।
6. शिक्षक प्रशिक्षण निरंतर होते रहने चाहिये।

तिवारी (1991) : ने ''मध्यप्रदेश में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया।'' इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये प्रारंभ किये गये थे वे कहां तक सफल हुये हैं।

इन संस्थानों का सेवापूर्व एवं सेवारत शिक्षकों की प्रशिक्षण व्यवस्था, औपचारिकेत्तर और प्रौढ़ शिक्षा के विकास में क्या योगदान है।

इस अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित है :-

1. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान शहर से 1 किलोमीटर से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।
2. मध्यप्रदेश के वैकल्पिक ढांचे द्वारा मध्यप्रदेश के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के लिए प्रस्तावित ग्यारह शाखायें किसी भी संस्थान में कार्यरत नहीं है।
3. अलग-अलग विभागों की समस्या में सबसे बड़ी समस्या स्टाफ की कमी है।
4. प्राचार्य केवल बारह संस्थानों में नियुक्त शेष संस्थानों में प्राचार्य प्रभारी का कार्य देख रहे हैं।
5. व्याख्याता के 14 पद स्वीकृत हैं, किसी भी संस्थान में सभी स्वीकृत पदों पर व्याख्याता नियुक्त नहीं हैं। अधिकांश पद रिक्त हैं।
6. पूर्व सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिये नया पाठ्यक्रम लागू हो गया है और उसमें छः विषयों को स्थान दिया गया है।
7. शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण शासन के आदेशानुसार आयोजित होते हैं।

8. संस्थानों में भौतिक सुविधाओं में अत्यंत कमी है, जैसे स्थान की कमी, फर्नीचर की कमी, शैक्षिक उपकरणों की कमी, पेयजल की कमी आदि।

रेड्डी (1991) : ने ''क्वालिटी इम्प्रूवमेंट ऑफ प्री सर्विस टीचर एज्यूकेशन ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर इन आन्ध्रप्रदेश'' शीर्षक पर शोध कार्य किया।

शोध कार्य के उद्देश्य थे आन्ध्रप्रदेश में प्री–सर्विस शिक्षक प्रशिक्षण तथा प्राइमरी स्कूल के शिक्षक की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना, शिक्षक की गुणवत्ता में सुधार लाना जो कि भौतिक सुविधाओं, स्टाफ पैटर्न तथा शिक्षक अधिनियम प्रक्रिया, पाठ्यक्रम तथा मूल्यांकन के संदर्भ में है :–

उपरोक्त शोध के निष्कर्ष इस प्रकार है :–

1. ज्यादातर टीचर्स इंस्टीट्यूट में भौतिक सुविधाएं पूर्ण रूप से नहीं थे।
2. वर्तमान प्रशिक्षणार्थी पैटर्न प्री–सर्विस की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु उपयुक्त नहीं था।
3. सभी शिक्षक प्रशिक्षकों ने इस बात पर जोर दिया कि गुणवत्ता में सुधार हेतु क्रियाकलाप आधारित शिक्षा तथा चार प्रमुख घटक जिनमें ज्ञान, समझ, व्यवहार तथा कौशल द्वारा शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता लाई जा सकती है।
4. सभी टीचर एजूकेटर्स संबंधित विषयों में स्नातकोत्तर थे तथा कम से कम 3 वर्ष का अनुभव था।

बैस (1995) : ने ''जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों की जनसंख्या शिक्षा संबंधी अवचेतना पर स्लाइड कमेंटरी पद्धति एवं व्याख्यान पद्धति के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन'' किया। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थे जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी की जनसंख्या संबंधी अवचेतना का अध्ययन करना, स्लाइड कमेंटरी पद्धति एवं व्याख्यान पद्धति द्वारा जनसंख्या शिक्षा प्राप्त करने वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अवचेतना में अंतर ज्ञात करना तथा एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित प्राथमिक शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा अवचेतना मापन उपकरण का परीक्षण करना।

अध्ययन के निष्कर्ष निम्नानुसार थे :–

1. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों की जनसंख्या शिक्षा संबंधी अवचेतना लगभग औसत स्तर की है। संभवतः डाइट के प्रशिक्षणार्थियों की जनसंख्या शिक्षा में विशेष रूचि नहीं है।
2. शिक्षा की व्याख्यान पद्धति की तुलना में स्लाइड कमेंटरी पद्धति अधिक प्रभावशाली है।

3. स्लाइड कमेंटरी पद्धति द्वारा उपकरण के लगभग सभी पदों के ज्ञान में वृद्धि हुई है।

राजपूत (1996) : ने ''शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू ''नामक प्रबंध में निम्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है :–

शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन, प्रशिक्षण का महत्व, प्रशिक्षण का मनोवैज्ञानिक आधार, तकनीक शिक्षा में प्रशिक्षण, शिक्षा के वर्तमान स्वरूप में प्रशिक्षण की अनिवार्यता, शैक्षिक प्रशिक्षण की गुणवत्ता बनाए रखने में सरकार की भूमिका, माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम।

गुप्ता (1996) : ने ''शहडोल जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान का कार्यात्मक अध्ययन''। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थे डाइट का कार्यात्मक विश्लेषण करना, डाइट की कमजोरियों और कमियों से अवगत कराना, डी.पी.ई.पी. के संदर्भ में डाइट के कार्यों का अध्ययन करना तथा डाइट की कार्यक्षमता तथा उसकी कार्यविधि में सुधार हेतु सुझाव देना था।

इस अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित है :–

1. शिक्षा के सार्वजनीकरण तथा साक्षरता के लिए डाइट की राष्ट्र के विकास में क्रियात्मक सुधार करने की आवश्यकता है।

जैन (1997) : ने ''गुजरात डाइट्स की केस स्टडी'' संरचना, कार्यात्मक विश्लेषण और मूल्यांकन के आधार पर की, जिसके प्रमुख उद्देश्य थे डाइट की स्थिति व संरचना का विश्लेषण करना, डाइट की प्रमुख कार्यात्मकता का विश्लेषण करना तथा राज्य की डाइट्स के कार्यान्वयन सुधार हेतु सुझाव देना।

अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित हैं :–

1. डाइट्स में संबंधित भौतिक सुविधाओं जैसे डाइट भवन, छात्रावास, स्टाफ क्वाटर्स, फर्नीचर, लाइब्रेरी, वर्कशाप की कमी है।
2. स्टाफ के पद रिक्त हैं। लाइब्रेरी में नई किताबों तथा पत्रिकाओं की कमी है।
3. प्रवेश के लिये योग्यता 10+2 न रखकर विद्यार्थियों के लिये एडमीशन टेस्ट का प्रावधान हो।
4. पाठ्यक्रम कुछ डाइट्स में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा बनाया गया लागू किया है जो सभी डाइट में हो।
5. बजट की कमी थी।

भदौरिया (1997–98) : ने ''विदिशा स्थित जिला शिक्षा संस्थान की कार्यप्रणाली का

एककवृत अध्ययन'' शीर्षक के अंतर्गत लघु शोध किया। जिसके उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. विदिशा स्थित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान का भौतिक संसाधनों व स्टाफ की जानकारी प्राप्त करना।
2. डाइट के प्रशासनिक कार्यों गतिविधियों का अध्ययन करना।
3. डाइट्स की समस्याओं व कमियों का अध्ययन करना।

इस अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार थे :-

1. अधिकांश स्टाफ प्रतिनियुक्ति एवं संविदा नियुक्ति पर कार्यरत हैं।
2. समस्त अकादमिक स्टाफ उच्च शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव रखता है।
3. वित्तीय सहायता हेतु संस्थान पूर्ण रूपेण एन.सी.ई.आर.टी. पर निर्भर है।
4. संस्थान में डी.पी.ई.पी. कार्यक्रम के अंतर्गत जिला स्तर, विकास खण्ड स्तर तथा संकुल केन्द्र स्तर पर प्रशिक्षण दिया जा रहा है।
5. प्रशिक्षणार्थियों को समस्त भौतिक सुविधाएं उपलब्ध हैं, परन्तु छात्रावास की दूरी अधिक है।
6. डाइट के सेवा पूर्व प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अत्यधिक उच्च सकारात्मक शिक्षक अभिवृत्ति पाई गयी।

एन. वेक्टैपाह (1998) : ने ''जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रदान किये गये आंतरिक साधनों का अध्यापन योग्यता पर प्रभाव का अध्ययन''।

उपरोक्त अध्ययन में डाइट के पूर्व सेवाकालीन शिक्षकों पर आंतरिक साधनों सुविधा प्रदान का प्रभाव देखना हैं।

इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. पूर्व सेवाकालीन शिक्षकों की अध्यापन योग्यता पर प्रशिक्षण स्टाफ के प्रभाव का अध्ययन।
2. पूर्व सेवाकालीन शिक्षकों की अध्यापन योग्यता पर छात्रों की व्यक्तिगत सेवा के प्रभाव क अध्ययन।
3. पूर्व सेवाकालीन शिक्षकों की अध्यापन योग्यता पर शैक्षिक सुविधाओं के प्रभाव का अध्ययन
4. पूर्व सेवाकालीन शिक्षकों की अध्यापन योग्यता पर सहपाठ्यक्रम प्रवृत्तियों के प्रभाव क अध्ययन।

अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार थे :-

1. कम स्टाफ वाले डाइट में प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन क्षमता अच्छी है, जबकि पूर्ण स्टाफ वा

डाइट में अध्यापन क्षमता में बढ़ोत्तरी होती है। डाइट गाइडलाइन्स के निर्देशानुसार पूर्ण सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रमाण में 9 अध्यापक होने चाहिए, लेकिन जिस डाइट में 9 अध्यापक नहीं है, इसमें भी प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन योग्यता में बढ़ोत्तरी होती है।

2. विषय के अंतर्गत प्रशिक्षणार्थियों को सिखाया जाता है, तथा ट्यूटोरियल प्रणाली की सुविधा दी जाती है वहां पर प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक योग्यता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
3. राज्य सरकार द्वारा अकादमिक सुविधा, सेमिनार खण्ड, फिजिकल साइन्स प्रयोगशाला, जीव विज्ञान प्रयोगशाला, शैक्षिक प्रोद्योगिकी तथा पुस्तकालय आदि की जिस डाइट में अच्छी सुविधा है, वहां प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक योग्यता बेहतर है।

कुलश्रेष्ठ (2002-03) : ने ''प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक सुधार हेतु भोपाल संभाग के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्ययन'' शीर्षक के अंतर्गत लघु शोध किया जिसके उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में शिक्षण प्रशिक्षकों तथा शिक्षकों के विचारों, मतों का अध्ययन करना।
2. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के सेवापूर्ण तथा सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्ययन करना।
3. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक सुधार हेतु किन विधियों एवं दक्षताओं का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, इसका अध्ययन करना।
4. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पर संचालित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवहारिकता का अध्ययन करना।
5. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण में प्राप्त विधियों को कक्षा में लागू करने में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार थे :-

1. प्रशिक्षण हेतु सभी प्राथमिक शिक्षकों को अवसर मिलना चाहिए, साथ ही बारी-बारी से सभी के लिए प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिये।
2. सभी शिक्षकों को शिक्षक प्रशिक्षण के प्रति प्रोत्साहित करना चाहिए, क्योंकि कई शिक्षक इसे आवश्यक ही नहीं समझते।

3. शिक्षकों पर गैर शिक्षकीय कार्यों का बोझ कम किया जाए जिससे वे शिक्षण कार्य भलीभांति कर सकें।

4. प्रशिक्षण को और अधिक व्यवहारिक बनाये जाने का प्रयास किया जाना चाहिए ताकि शिक्षक प्रशिक्षण से प्राप्त विधियों को कक्षा में लागू कर सकें।

5. प्रशिक्षकों द्वारा स्कूलों का अवलोकन अनिवार्य व नियमित रूप से किया जाना चाहिए, क्योंकि स्कूलों में शिक्षक प्रशिक्षण द्वारा प्राप्त विधियों को कक्षा में लागू नहीं करते हैं।